

पुस्तक उद्घाटन

मध्य प्रदेश कला परिषद्

नव ५३

१८८९

PAR AVION
VIA AIR MAIL
LUFTPOST



Mr. J. H. Raza
101, Rue De Charonne
Cité Du Couvent
PARIS 75011, FRANCE

Pankaj Singh

49, Gomti Guest House

Behind Sapru House

Barakhamba Road

NEW DELHI 110001

INDIA

[INDE]

नयी दिल्ली
27 अगस्त '80

Replied on the 6th Oct
1980

आदरणीय राजा भाई, इतनी देर से आपको लिख रहा हूँ कि क्षमा माँगते हुए भी
शर्मिन्दा हूँ। दरअसल, आपने ही दिल्ली की लू के थपेड़ों ने मुझे अस्वस्थ कर दिया था।
स्वस्थ होकर टेलिविजन के लिए जल्दी जल्दी एक कार्यक्रम किये, दो बार सार्वजनिक गोष्ठियों में
और एक बार रेडियो पर अपनी कविताओं का पाठ किया। फिर दिल्ली से निकल भागा। लौटकर
जुलाई में जब वापस दिल्ली पहुँचा तो आपके भेजे हुए दोनों चित्र मिले जिनका मुझे बेसुब्री से
इन्तजार था। मैंने सोचा कि जब प्रकाशक छपाई का काम शुरू कर दें तभी आपको लिखूँ, इसलिए
पेरिस में लिखी अपनी कविताओं को ठीक ठीक करने में लग गया। पाण्डुलिपि और मुखपृष्ठ के
लिए आपके चित्रों में से एक इसीमाह की चौदह तारीख को प्रकाशक को भेजे जाँचे हैं। उम्मीद है
आगले महीने के दूसरे तीसरे सप्ताह तक संपादित हो जायेगा। ज्यों ही संपादित हो जायेगा आपको
मिजवाड़ंगा।

[चित्र के मद्रण के लिए भेजे प्रकाशक मित्र को जम्मीरतापूर्वक
हिदायतें दी हैं। यहाँ के कई आफ़सेट प्रेशों में में स्वयं भी गया। अन्ततः कुछ चित्रकार मित्रों
ने सलाह दी कि संतोषप्रद परिणाम के लिए सिर्फ़ स्त्रीम प्रिंटिंग करायी जाय-चाहिए जिसके
लिए प्रकाशक राजी हो गये हैं। प्रकाशक के मित्र होने के कारण ही यह सम्भव हो पाया कि हिफ़्
मुखपृष्ठ के मद्रण के लिए चार हजार रुपये खर्च हों, अन्यथा आम तौर पर इस काम के लिए
चार-छः सौ रुपयों से अधिक खर्च करने को हिन्दी के प्रकाशक तैयार नहीं होते।]

29 अगस्त '80

27 की शाम को 'पूर्वग्रह' के नये अंक का विमोचन था। उसी कार्यक्रम का एक हिस्सा एक युवा
कवि को पुरस्कृत करने का और दूसरा पाँच कवियों के कव्य पाठ का था। हमारे मित्र और प्रिय
कवि केदारनाथ सिंह ने अपनी बिल्कुल ताज़ा कविताएँ पढ़ायीं। आपने अनुभव के बारे में अगर
थोड़े शब्दों में कहें तो यह कुछ ऐसा अनुभव था जो अद्भुत और अनोखे सौन्दर्य की शक्ति से
गुजरते हुए एक अतीन्द्रिय सुख तक जाँने का होता है।

रात को कमरे में लौटकर 'पूर्वग्रह' का भारी भरकम अंक पढ़ता रहा।
हमारी मुलाकात के एक दिन को आपने अपनी सृजनशीलता की आन्तरिक दुनिया से जिस तरह
जोड़ा है और कवि-कर्म और चित्रकला की प्रक्रिया के जो सामान्य भीतरी सरोकार, गोरिम और
अन्तर्गत तन्तु शब्दों के माध्यम से टोले हैं वह मेरे लिए आपकी भाषिक दक्षता की नयी प्रतीति
की-सी है। मेरी बधाइयाँ स्वीकार कीजिए। मेरा एक पुत्रराज भी है। मैं स्वयं को अतिशय नहीं
मानता। आपसे हुई हर मुलाकात में भाषा और रंगों के जितने नये द्विर्ज खलते रहे वे सब
निरन्तर मुझे इस प्रसन्नता से भरते गये कि कहीं हमारे माध्यमों और जीवन दृष्टियों के फर्क
के बावजूद एक दुनिया है जिसे हमने आविष्कृत किया है और वहाँ वय की रसियाओं के बावजूद
हम मित्र सरीखे हैं। आपको ऐसा नहीं लगता क्या?

भारत में पिछले दिनों साम्प्रदायिक दंगों की एक शृंखला सी-चलती रही है। अरबबारों में आपने
शायद पढ़ा हो कि मुरादाबाद, इलाहाबाद, अलीगढ़ और मऊ जैसे शहरों में रैकड़ों जाँने गयीं।
दिल्ली में भी यह जहर फैला और पुरानी दिल्ली के इलाकों में कई मौते हुईं। इन तमाशजगहों में
ऐसी भेजी गयी है और कफ़र लगा है। तनाव अब भी काफ़ी है। देश भर में सड़गाई, बदहाली
और दैनन्दिन जीवन की कठिनाइयों के कारण हिंसा का वातावरण है। स्थितियों पर केन्द्रीय सत्ता
की पकड़ दिनोंदिन कमजोर होती जा रही है। आराम आन्दोलन के लिए चल रही समझौता-वादी
अभियान हो गयी है। पता नहीं कब, फिर से, आग भड़क उठे। मुझे पसन्द है ज्यादा अब लगता है
कि इस अभाग्य दरिद्र देश को एकबार बड़ी आग में जलना है और इसका रक्तदान होना है। मौजूदा
व्यवस्था के पास व्यापक जनजीवन की समस्याओं का कोई समाधान नहीं बचा है।

आप कैसे हैं? मौंजीला भाभी कैसे हैं? आप दोनों मेरे प्रणाम लें।
आजकल एलिजाबेथ महीने भर की छुट्टियाँ गुजारने लगी हुई हैं। परशो उन्हें लेकर शिमला जा
रहा हूँ। सितंबर के मध्य तक हम दोनों दिल्ली लौट आयेंगे।

आपका अपना

पंजु
सिंह

49, गोमती गेस्ट हाउस
राष्ट्र हाउस के पीछे
बाराखम्बा रोड, नयी दिल्ली 110001